Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

जनपद जौनपुर के ग्रामीण विकास में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका का भौगोलिक आयाम

वीनस प्रकाश
शोध छात्र भूगोल,के.एन.आय.पी. एस.एस. सुलतानपुर। (उ.प्र.)
Email: venus.26335@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180111
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 52-54
January - 2026
Submitted: 16 Dec. 2025
Revised: 26 Dec. 2025
Accepted: 11 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में भारत के ग्रामीण विकास में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है, विशेष रूप से जौनपुर जनपद के संदर्भ में। भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में पूँजी की कमी, बेरोज़गारी तथा मौसमी रोजगार जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं। ऐसी स्थिति में लघु एवं कुटीर उद्योग कम पूँजी, स्थानीय कच्चे माल तथा पारंपरिक कौशल के उपयोग द्वारा ग्रामीण जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध कराते हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जौनपुर जनपद में पंजीकृत लघु उद्योगों एवं औद्योगिक इकाइयों का वितरण असमान है, फिर भी ये उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने, आय में वृद्धि, बेरोज़गारी में कमी तथा संतुलित क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। निष्कर्षतः, लघु एवं कुटीर उद्योग ग्रामीण विकास, आर्थिक समानता तथा आत्मनिर्भरता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं और इनके विस्तार हेतु सरकारी नीतियों, निवेश एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : *लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, ग्रामीण विकास, रोजगार, क्षेत्रीय असमानता, जौनपुर जनपद, आर्थिक विकास*

प्रस्तावना

भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था में पूंजी का आभाव, गरीबी व बेरोजगारी के साम्राज्य को कम करने में लघु एवं कुटीर उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका है। लघु उद्योगो के महत्व के बारे में कहा जाता है, ''लघु उद्योग भारत की क्षमताओं और उसके भावी विकास की कुंजी है जिससे संसाधनो के विदोहन व लाखो व्यक्तियों के क्षमताओं का उपयोग किया जाता है। लघु एवं कुटीर उद्योगों में ही आज की अनेक ज्वलन्त समस्याओं का समाधान निहित है।[1] ग्रामीण विकास में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भागीदारी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। महात्मा गांधी ने कहा था, ''भारत का कल्याण उसके कुटीर उद्योगों में निहित है।'' आज भारत के औद्योगिक उत्पादन में लघु एवं कुटीर उद्योगों की 40 प्रतिशत भागीदारी है जबकि कुल राष्ट्रीय उत्पादन में इसका योगदान 10 प्रतिशत हैं ये उद्योग देश के 32 प्रतिशत लोगों को रोजगार उपलब्ध कराते है। भारत के कुल निर्यात में इनका 34 प्रतिशत योगदान है। भारत एक कृषि प्रधान देश है किन्तु हमारे किसानों के पास वर्षभर कृषि कार्य नहीं रहता, वर्ष में कुल 200 दिन ही कृषि कार्य में उपयोग हो पाते हैं। लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास से कृषि में लगे हुए व्यक्तियों की आय में वृद्धि होगी, यह उद्योग हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अनुकूल होगें। हमारे गॉव में पूंजी का आभाव तथा श्रम की अधिकता होने से खाली समय में व्यक्ति श्रम करके अपनी आय बढ़ा सकता है, इन उद्योगों में पूंजी का विनियोजन भी कम है तथा ज्यादा लोगों को रोजगार उपलब्ध होता है।[2]

जनपद जौनपुर में कुल पंजीकृत लघु कारखानों की संख्या 29 है जिनमें 2035 लोगों को रोजगार उपलब्ध है। लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 778 है जिनमें 1802 व्यक्ति कार्य करते है। जनपद में सर्वाधिक पंजीकृत कारखानों की संख्या मुँगरा बादशाहपुर विकास खण्ड में 12 है जिनमें 598 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है, द्वितीय स्थान पर शाहगंज में 4 पंजीकृत कारखाने तथा 69 व्यक्ति तथा तृतीय स्थान पर केराकत, जलालपुर व रामपुर में 2 पंजीकृत कारखाने तथा क्रमशः 227, 39 व 22 व्यक्ति कार्यरत है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
वीनस प्रकाश, शोध छात्र भूगोल, के.एन.आय.पी. एस.एस. सुलतानपुर। (उ.प्र.)

How to cite this article:
प्रकाश, . वीनस . (2026). जनपद जौनपुर के ग्रामीण विकास में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका का भौगोलिक आयाम. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 52–54. https://doi.org/10.5281/zenodo.18604733

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18604733
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

जिन विकास खण्डों में एक भी पंजीकृत कारखाने नही है वहाँ उद्योगों को लगाने के लिए लोगों को प्रोत्साहन व प्रशिक्षण देना चाहिए इसके लिए सरकारी नीति व पूंजी निवेश अहम भूमिका निभा सकती है। सर्वाधिक लघु औद्योगिक इकाईयाँ सरकोनी विकास खण्ड में 46 है जिनमें 118 व्यक्ति कार्यरत है। दूसरे स्थान पर करंजाकला, मुँगराबादशाहपुर व मडियाहूँ में 45 लघु इकाईयाँ तथा क्रमशः 128, 130, 142 व्यक्ति कार्यरत है। ज्यादातर विकास खण्डो में लघु औद्योगिक इकाईयों की संख्या 20 से 30 के मध्य तथा रोजगार से जुड़े व्यक्तियों की संख्या 40 से 60 बीच है। लघु एवं कुटीर उद्योग निम्न प्रकार से जनपद के ग्रामीण विकास में सहायक है।

1. **संतुलित विकास में सहायक–** बड़े उद्योग शहरी क्षेत्रों में स्थापित है तथा यह शहरी क्षेत्रों के श्रमिकों के लिए लाभदायी होते है जबकि ग्रामीण क्षेत्र के आर्थिक विकास में लघु व कुटीर उद्योग सहायक होते

सारिणी सं.–01
जनपद जौनपुर में पंजीकृत कारखाने, लघु औद्योगिक इकाईयाँ एवं उनमें कार्यरत श्रमिक वर्ष 2021–22

क्र. सं.	विकास खण्ड	पंजीकृत कारखाने की संख्या	कार्यरत श्रमिकों की संख्या	लघु औद्योगिक इकाईयों की संख्या	कार्यरत श्रमिकों की संख्या
1.	सुइथा कलाँ	–	–	17	28
2.	शाहगंज	4	69	39	108
3.	खुटहन	–	–	32	22
4.	करंजा कलाँ	1	952	45	128
5.	बदलापुर	–	–	42	119
6.	महराजगंज	–	–	31	79
7.	बक्शा	–	–	28	14
8.	मुँगरा बादशाहपुर	12	598	45	130
9.	मछलीशहर	–	–	35	86
10.	मड़ियाहूँ	–	–	45	142
11.	बरसठी	–	–	34	89
12.	सिकरारा	–	–	28	25
13.	धर्मापुर	–	–	20	23
14.	रामनगर	–	–	16	25
15.	रामपुर	2	22	33	87
16.	मुफ्तीगंज	–	–	32	65
17.	जलालपुर	2	39	14	18
18.	केराकत	2	227	30	6
19.	डोभी	1	73	13	15
20.	सिरकोनी	–	–	46	118
21.	योग ग्रामीण	24	1980	625	1327
22.	योग नगरीय	05	55	153	475
23.	योग जनपद	29	2035	778	1802

स्रोत–सांख्यिकी पत्रिका जनपद जौनपुर–2022

हैं साथ ही साथ ये उद्योग स्थानीय कच्चे माल का उपयोग करके स्थानीय आवादी को लाभ पहुँचाते है। लघु व कुटीर उद्योगों के लिए कम पूंजी व कम तकनीकि ज्ञान की आवश्यकता होती है तथा इसमें स्थानीय परम्परागत प्रतिभा व कला सुरक्षित रहती है। वर्तमान समय में प्रदेश में कई उद्योग ऐसे हैं जो परम्परागत कला के माध्यम से अपनी पहचान बनाये हैं। जैसे बनारस की साड़ियाँ, मुरादाबाद के वर्तन तथा हाथी के दांत के काम इत्यादि।

लघु व कुटीर उद्योगों में बड़े उद्योगों की तुलना में समस्यायें कम होती है जैसे श्रमिकों की हड़ताल, श्रमिकों की छटनी, कच्चे माल की कमी इत्यादि। लघु उद्योगों में उत्पादन शीघ्र होने लगता है, स्थापित करने में कम समय लगता है इसलिए इन्हे शीघ्र उत्पादन उद्योग भी कहते है। लघु व कुटीर उद्योगों में बड़ी मशीनो व तकनीकों का आयात भी नही करना पड़ता है।

2. **रोजगार में वृद्धि–**भारत जैसे विकास शील देश में पूंजी का आभाव व श्रमाधिक्य है यह परिस्थिति कुटीर व लघु उद्योगों के लिए उपयुक्त है अतः वर्तमान परिस्थिति में देश की बेकारी की समस्या के समाधान हेतु लघु व कुटीर उद्योगों का विकास आवश्यक है। भारतीय ग्रामीण क्षेत्र में इसमें अल्प समय में बेरोजगारी को कम करने में सहायता मिलेगी।
3. **आर्थिक समानता में वृद्धि–**लघु तथा कुटीर उद्योग घरेलू उद्योग के रूप में छोटे पैमाने पर चलाये जाते हैं, इनसे लाभ भी अपेक्षाकृत कम होता है जिससे नागरिक सत्ता का केन्द्रीयकरण या शोषण जैसी सामाजिक समस्याऐं नहीं उत्पन्न होती हैं। यह उद्योग साधारण आर्थिक स्थिति वाले भी संचालित कर लेते है जिससे उनकी आय में वृद्धि का अवसर प्राप्त होता है।
4. **ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अनुरूप–**भारत की 64 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या कृषि पर निर्भर है उसे वर्षभर कार्य नही मिलता इस दृष्टि से लघु व कुटीर उद्योग अत्यन्त उपयोगी है। ए उद्योग हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते है।[3]
5. **छिपे हुए संसाधन तथा योग्यता का उपयोग–**लघु उद्योग अपसंचित धन एवं कौशल तथा छिपे हुए संसाधन में उपयोग में सहायक होते हैं यदि वचत व कौशल का उपयोग उत्पादक कार्यों में नही लगाया गया तो उसका दुरूपयोग हो सकता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत ऐसे व्यक्ति है जिनके पास क्षमता, कौशल आदि है परन्तु उपयोग नही हो पाता है, यदि लघु उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाय तो निष्क्रिय संसाधनो का उपयोग होगा तथा ग्रामीण विकास में गति लायी जा सकती है।

6. **आयात पर निर्भरता में कमी**–बड़े उद्योगों हेतु मशीन, तकनीकी व कच्चा माल अधिकांश आयात करना पड़ता है जबकि लघु व कुटीर उद्योगों हेतु आयात नही करना पड़ता इसमें ए सभी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो जाते हैं जिससे आयात पर निर्भरता कम रहती है।
7. **पर्यावरण के अनुकूल**–भारत विभिन्न जलवायु कटिबन्ध का देश है इसमें प्रत्येक कटिबन्ध में अलग अलग कच्चे माल उपलब्ध हैं तथा स्थानीय कच्चे माल पर ही लघु व कुटीर उद्योग स्थापित होते हैं इसलिए ए पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित होते हैं तथा यह आस पास के वातावरण के प्रतिकूल भी नही होते हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लघु व कुटीर उद्योग बड़े पैमारे पर तत्काल रोजगार उपलब्ध कराते हैं, राष्ट्रीय आय में अपेक्षाकृत अधिक न्यायपूर्ण वितरण का कार्य करते हैं, पूंजी व संसाधनो को प्रभाव शाली ढंग से गति प्रदान करते है तथा स्थानीय संसाधनो का सर्वोत्तम ढंग से विदोहन करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्र जयप्रकाश (1998) भारतीय अर्थव्यवस्था, मिश्रा ट्रेडिंग कार्पोरेशन वाराणसी पेज 310–355
2. मिश्र एस.क. (2000) ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका, कुरूक्षेत्र गई 2000 अंक–7 पेज 27–25
3. देखें संदर्भ संख्या–1